पौध-सुरक्षा

आम का समेकित रोग प्रबंधन

आम के बगीचों पर विभिन्न रोगों का आक्रमण होता है जिससे बगीचा मालिकों को खराब गुणवत्ता के फल और कम फल प्राप्त होते हैं। केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ ने समेकित रोग प्रबंधन के लिए एक कैलेण्डर विकसित किया है।

जनवरी

- खेतों की सिंचाई कर पौधों को पाले के प्रकोप से बचाना। छोटे पौधों के ऊपर छप्पर बनाकर उनकी रक्षा की जानी चाहिए। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि छप्पर का पूर्वी भाग खुला रहे ताकि कम से कम समय में सूर्य का प्रकाश अंदर आ सके। आम में गुच्छों की विकृत आकृति (मालफार्मेशन) की समस्या को नियंत्रित करने के लिए नई कलियों अथवा नए बढ़ते हुए पुष्प गुच्छों को विकसित नहीं होने देना चाहिए।

फरवरी

- चूर्णी फफूंद से प्रभावित पत्तियों और विकृत आकृति वाले पुष्पगुच्छों को हटाकर जला देना चाहिए। चूर्णी फफूंद के नियंत्रण हेतु 2 ग्रा./लीटर वेटेबल सल्फर का प्रथम छिड़काव करें। घोल में तरल साबुन मिलाया जाता है ताकि फफूंदनाशी अच्छी तरह से चिपक जाए और इसे ज्यादा प्रभावकारी बनाए। सामान्यतया पौधे की आयु पर निर्भर करते हुए एक पौधे के लिए 10-20 लीटर घोल की आवश्यकता होती है।

मार्च

- चूर्णी फफूंद के नियंत्रण के लिए ट्राइडेमार्फ (कैलिक्सीन की दर 0.1 अर्थात 1 मि.ली./ली.) का दूसरा छिड़काव करें। इस बात का ध्यान भी रखा जाना चाहिए कि दूसरा छिड़काव फूलों के निकलने से पहले कर दिया जाए। मास के तीसरे अथवा चौथे सप्ताह में, डाइनोकैप अथवा ट्राइडेमेफोन (काराथेन अथवा बेलेटॉन) 0.1% (1 मि.ली. अथवा 1 ग्रा./ली.) का छिड़काव किया जाता है। तीसरा छिड़काव तब किया जाता है जब फल समूह उग चुके हों। इस मास के दौरान, आम के टिड्डों का संयुक्त रूप से नियंत्रण करना चाहिए।

अप्रैल

- यदि पुष्प गुच्छों पर ब्लॉसम ब्लाइट अथवा एंथ्राकनोज दिखाई पड़े तो कार्बेनडेजीम (बेवीस्टिन) का 0.1% (1 ग्रा./लिटर) की दर से छिड़काव किया जाना चाहिए। साथ ही साथ प्रभावित पत्तियों और टहनियों को हटाकर जला देना चाहिए ताकि इस को नियंत्रण में रखा जा सके।

मई

- इस अवधि के दौरान ब्लैक टिप अथवा आंतरिक नेक्रोसिस के नियंत्रण के लिए बोरेक्स के 1% की दर से दो से तीन छिड़काव वांछनीय है। चूंकि बोरेक्स साधारण ठंडे पानी में आसानी से नहीं घुलता इसलिए इसे पहले गुनगुने पानी की

थोड़ी मात्रा में घोलना चाहिए और बाद में वांछित मात्रा के अनुसार मात्रा बढ़ायी जानी चाहिए। संक्रमण के नियंत्रण के लिए थायोफेनेट मिथाइल अथवा कार्बेनडेजीम (टाप्सीन एम. अथवा बेवीस्टीन) का 0.1% (1 ग्रा./लि.) की दर से 1-2 छिड़काव किया जा सकता है ताकि आम के फलों की तुड़ाई-उपरांत रोगों से रक्षा की जा सके। कज्जली फफूंद के नियंत्रण हेतु वेटेबल सल्फर+मोनोक्रोटोफोस+कीकर

गौंद (क्रमश: 0.2, 0.05 और 0.3%) के मिश्रण का छिड़काव किया जा सकता है। कज्जली फफूंद के नियंत्रण के लिए 3% सांद्रता वाला इण्डियन ऑयल फॉरम्यूलेशन (ट्री स्प्रे ऑयल) भी प्रभावकारी है।

जून

- यदि फलों पर बैक्टीरियल कैंकर रोग होने की आशंका हो तो, स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 200 पी पी एम का दूसरा छिड़काव भी किया जा सकता है।

जुलाई

- एंथ्रैक्नोज और रेड रस्ट के नियंत्रण के लिए तीसरे अथवा चौथे सप्ताह में कॉपर-ऑक्सीक्लोराइड का 0.3% (3 ग्रा./ली.) की दर से छिड़काव किया जा सकता है। नर्सरी की मिट्टी को फार्मल्डिहाईड से जीवाणुरहित कर विसंक्रमित करें तथा उसके बाद इसे पॉलीथीन शीट से ढक दें। बाद में, पॉलीथीन शीट को हटाकर मिट्टी को खुला छोड़ देना चाहिए ताकि मिट्टी से बचा हुआ फार्मल्डिहाईड वाष्पीकृत होकर उड़ जाए। आम की गुठलियों का भी थीरम या कैप्टॉन का 0.3% की दर से उपचार किया जाना चाहिए।

अगस्त

- एंथ्रैक्नोज और रेडरस्ट से फसल की रक्षा करने के लिए 15-20 दिनों के अंतराल पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का 0.3% की दर से दूसरा और तीसरा छिड़काव करें। पौध सड़न के नियंत्रण हेतु खेत की मिट्टी को कैप्टॉन का 0.3% की दर से उपचारित भी किया जाए। जड़ में सड़न पैदा करने वाले फफूंद के संक्रमण की आशंका को कम करने के लिए नर्सरी में पानी के निकास की समुचित व्यवस्था करें। स्लेरोटियम या राइजोक्टोनिया के सहजीवी परपोषियों को हटाने के लिए निराई-गुड़ाई करें।

सितंबर

- यदि एंथ्रैक्नोज अथवा रेड रस्ट का ज्यादा प्रकोप हो तो कॉपर-ऑक्सीक्लोराइड का एक बार और छिड़काव किया जा सकता है। विभिन्न रोगजनकों के परपोषियों के नियंत्रण हेतु खेत की सफाई और जुताई करें।

अक्तूबर

- डाई-बैक के नियंत्रण हेतु, संक्रमित और सूखी शाखाओं की इस तरह से निराई की जानी चाहिए कि इन्हें सूखे हुए भाग से 5 से 8 सें.मी. नीचे ही हटाया जाए। निराई के बाद नर्सरी पौधों में कटे हुए सिरों पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का पेस्ट

लगाएं, जबकि बढ़े हुए पौधों के मामले में कॉपर-ऑक्सीक्लोराइड का 0.3% की दर से छिड़काव करें। इस छिड़काव से फोमा चित्ती (फोमा ब्लाइट) और गूमोसिस की भी रोकथाम होती है। गूमोसिस के नियंत्रण हेतु, पौधों की आयु पर निर्भर करते हुए कॉपर सल्फेट का प्रयोग किया जा सकता है। इस माह के दौरान पौधे की शक्ति को विकसित करने और विभिन्न रोगों से रक्षा करने के लिए उर्वरकों की सिफारिश की गई मात्रा का प्रयोग करें। आम में कुपोषण के नियंत्रण के लिए अक्तूबर में प्रथम सप्ताह में 200 पी.पी.एम. नेफ्थेलीन एसीटिक अम्ल का छिड़काव करें।

नवम्बर

- डाइबैक रोग के नियंत्रण के लिए कॉपर-ऑक्सीक्लोराइड का 0.3% की दर से दूसरा और तीसरा छिड़काव करें। इस छिड़काव से फोमा चित्ती (फोमा ब्लाइट) रोग का काफी नियंत्रण होता है।

दिसम्बर

- जनवरी के लिए उल्लिखित परिचालनों के अनुसार पाले से होने वाली क्षति से फसल की सुरक्षा करें। आम की विकृति के नियंत्रण के लिए नई पुष्प कलियों को तोड़ देना चाहिए।

प्रत्येक बागवान द्वारा इन सभी परिचालनों को अपनाना आवश्यक हो सकता है अथवा नहीं भी हो सकता है। ये परिचालन आवश्यकता पर आधारित हैं और विभिन्न आम उत्पादक क्षेत्रों में रोग की गम्भीरता पर निर्भर हैं।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

निदेशक
केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान
(भा.कृ.अनु.प.)
रहमानखेड़ा
पो.ओ. ककोरी
लखनऊ 227 107